प्रत्यंगिरा सहस्रनाम

5902

F-20

Complete



ॐश्रीगणेशायनमः ॥ श्रीमहाप्रत्यंगिरायैनमः
श्रीगुरवेनमः ॥ श्रीईश्वरउवाच ॥ शृणुदेविप्र
वक्ष्यामिसांप्रतंतत्त्वरानने ॥ सहस्रनामपर
मंप्रत्यंगिरार्थसिद्धये ॥ सहस्रनामपाठेन
सर्वत्रविजयीभवेत् ॥ पराभवोनचास्यास्ति
सभायांवावनेरणे ॥ २ तथातुष्टाभवेद्देवी
प्रत्यंगिरास्यपाठतः ॥ यथाभवतिदेवेशिसा

यकः शिव एव हि ॥ अश्वमेधसहस्राणि वाजपे
यस्य कोटयः ॥ सकृत्पाठेन जायन्ते प्रसन्नाय
त्पराभवेत् ॥ भैरवोस्य ऋषिश्छन्दोनुष्टुप् देवी
समीरिता ॥ प्रत्यंगिरा विनियोगः सर्वसंपत्ति
हेतवे सर्वकार्येषु संसिद्धिः सर्वसंपत्तिदा भ
वेत् एवं ध्यात्वा पठेदेनं यदीच्छेदात्मनो हितं ॥
ॐ अस्य श्रीप्रत्यंगिरासहस्रनामस्तोत्रमहामं

सं. २

२

त्रस्य ॥ भैरव ऋषिः ॥ शिरसि ॥ अनुष्टुप् छंदः ॥ मुखे ॥ श्रीम
हाप्रत्यंगिरादेवता ॥ हृदि ॥ ह्रीं बीजं ॥ गुह्ये ॥ स्त्रीं शक्तिः ॥
पादयोः ॥ स्वाहा कीलकं ॥ नाभौ ॥ परकृत्या विनाशार्थे
जपे पाठे विनियोगः ॥ सर्वांगेषु ॥ अथ करन्यासः ॥ ॐ
ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ह्रीं ॥ तर्जनीभ्यां नमः ह्रूं मध्यमा
भ्यां नमः ह्रैं ॥ अनामिकाभ्यां नमः ह्रौं कनिष्ठका
भ्यां नमः ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः इति करन्या

सः ॥ अथ षडंगन्यासः ॥ ह्रां हृदयाय नमः ॥ ह्रीं शि
रसे स्वाहा ॥ ह्रूं शिखायै वौषट् ॥ ह्रैं कवचाय हुम् ॥
ह्रौं ॥ नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ह्रः ॥ अस्त्राय फट् ॥ इति षडंग
न्यासः ॥ अथ ध्यानं ॥ आशांबरा मुक्तकचा घनच्छवि
र्ध्येया सवर्मासिकराहिभूषणा ॥ दंष्ट्रोग्रवक्त्रा ग्र
सिताहितान्वया प्रत्यंगिरा शंकरतेजसेरिता ॥ उ
क्तिध्यानं ॐ देवी प्रत्यंगिरा दिव्या सरसा शशिशे

पु॰
स॰
३

3

खरा॥ सुमना॥ सामिधेनी॥ च॥ समस्तसुरशोमुखी॥ स
र्वसंपत्तिजननी॥ सर्वदा॥ सिंधुसेविनी॥ शंभुसीमं
तिनी॥ सोमो॥ सुराराख्या॥ सुयारसा॥ २॥ रसा॥ रसवती
वेला॥ वन्या॥ च॥ वनमालिनी॥ वनजाक्षी॥ वनचरी॥
वनी॥ वनविनोदिनी॥ ३॥ वेगिनी वेगदा वेगबला
स्या च बलाधिका कला कलप्रिया कोली को
मला कालकामिनी ४ कमला कमलास्या च

कमलस्था ॥ कलावती ॥ कुलीना ॥ कुटिला ॥ कांता ॥
कोकिला ॥ कलभाषिणी ॥ ५ ॥ कीरकेलिः ॥ कला ॥
काली ॥ कपालिन्यपि ॥ कालिका ॥ केशिनी ॥ च ॥ कुश
वर्त्ता ॥ कौशांबी ॥ केशव ॥ प्रिया ॥ ६ ॥ काशी ॥ काश
महाकाशी संकाशा ॥ केशदायिनी ॥ कुंडली ॥ कुंड
लास्था च कुंडलांगदमंडिता ॥ ७ ॥ कुणपाली ॥ कु
मुदिनी कुमुदा प्रीति वर्धिनी कुंदप्रिया कुंदरु

पु. स. ५

विः॥कुरंगमदमोदिनी॥द॥कुरंगनयना॥कुंदा॥कुरुवृं
दाभिनंदिनी॥कुसुंभकुसुमा॥कांचीक्वणत्किंकिणिका
कटुः॥९॥कठोरा॥करुणा॥काष्ठा॥कौमुदी॥कंबुकंठि
नीपि॥कपर्दिनी॥कपटिनी॥कठिनी॥कालकंठिका
१०॥कीरहस्ता॥कुमारी॥च॥कुरुंदा॥कुसुमप्रिया॥कुं
जरस्था॥कुंजरता॥कुंभी॥कुंभस्तनद्वया॥११॥कुंभिगा
करिभोरुश्च च कदली दलशालिनी कुपिता को

५

टरस्था॥चकंकाली॥कंदरोदरा॥१४१॥एकांतवासि
नी॥कांची॥कंपमानशिरोरुहा॥१४०॥कादंबरी॥क
दंबस्था॥कुंकुमप्रेमधारिणी॥१४३॥कुटुंविनीप्रिया
कृतिः॥कृतुः॥कृतुकरीप्रिया॥कात्यायनी॥कृत्तिका
च कार्त्तिकेयप्रवर्त्तिनी॥कामपत्नी॥कामदात्री॥
कामेशी कामवंदिता कामरूपा कामगतिः॥का
माक्षा काममोहिता खड्गिनी खेचरी खड्गा खं

प्र॰
स॰
५
5

जरीटेन्नणा ॥ खेला ॥ २५ ॥ खेरगा ॥ खेरनामा ॥ च ॥ खेरास्या
खेलनप्रिया ॥ खेराक्षा ॥ खेटिनी ॥ खेद्धा ॥ खेगा ॥ खेद्धंग
यारिणी ॥ २६ ॥ खीलखंडिनिवि ॥ ख्याता ॥ खंडिता ॥ खंड
नीस्थिता ॥ खंडप्रिया ॥ खंडखाद्या ॥ सेंडखंडा ॥ च ॥ खंडि
नी ॥ २७ ॥ गंगा ॥ गोदावरी ॥ गौरी ॥ गोमत्यपि च गोतमी
गया गेया गगनगा गारुडी गरुडध्वजा २८ गी
ता गीतप्रिया गोपा गंडप्रीता गुणि गिरा गौ

गौरी ॥ मंदमदना ॥ गोकुला ॥ गोप्रनारिणी ॥ १९ ॥ गो
दा ॥ गोविंदिनी ॥ गूढा ॥ निर्गूढा ॥ गूढविग्रहा ॥ गुं
जिनी ॥ गजगा ॥ गोपी ॥ गोत्रत्नयकरी गदा ॥ २० ॥ गि
रि भूपालदुहिता ॥ गोगा ॥ गोकुलवर्धिनी ॥ घनस्त
नी घनरुचि र्घनोरु ॥ घननिःस्वना ॥ २१ ॥ घूत्कारि
णी घूकपरिवारिता ॥ घंटानादप्रिया ॥ घंटा ॥ घ
ना घोटकवाहिनी २२ घोररूपा च घोरा च

प्र॰ चूनी॥ प्रतिचना॥ चनीचूतताची॥ चनपृष्ठी॥ चा॥ चटा॥ च
स॰ नचटाऽम्नता॥ २३॥ चटस्था॥ चटना॥ चौच चातपातनि
८ वारिणी॥ चंचरीकी॥ चकोरी॥ चा॥ चामुंडा॥ चीरधारि
णी॥ २४॥ चातुरी॥ चपला॥ २॰॥ चक्रचला॥ चेला॥ च
6 ला॥ चला॥ चतुश्चिरंतना॥ चाका॥ चिक्या चामीकरछ
विः चापिनी चपला चंपूष्ठिना चिंतामणि छ्वि
ना चातुर्वर्णमयी चंचुः चौराचार्या चमत्कृतिः

२८॥ चक्रवर्तिवपुः॥ चक्रा॥ चक्रांगा॥ चक्रमोदिनी॥ चे
तश्वरी॥ चित्तहृत्॥ चेतना॥ चेतनप्रदा॥ २९॥ चांपेयी
चंपकप्रीतिः॥ चंडी॥ चंडालवासिनी॥ चिरंजीवित
दा॥ चिंता॥ तरुमूलनिवासिनी॥ छुरिका॥ छत्रम
ध्यस्था॥ छिद्रा॥ छेदकरी॥ छिदा॥ ३०॥ छुछुंदरीप
लप्रीतिः॥ छुछुंदरीनिभस्वना॥ छलिनी॥ छलदा॥
छन्ना॥ छिटिका॥ छेककृत्॥ तथा॥ छायिनी॥ छांद

प्र· स· ८

7

सी॥ छाया॥ छायाकृच्छ दि॥ रित्यपि॥ जया॥ चजयदा॥
जाति॥ र्जयस्था॥ जयवर्धिनी॥ ३०॥ जपापुष्पप्रिया॥ ज
प्या॥ जंभिनी॥ जमला॥ युता॥ जंबूप्रिया॥ जयस्था॥ च
जंगमा॥ जंगमप्रिया॥ ३१॥ जंतु॥ र्जंतुप्रधाना॥ च॥ ज
रत्कर्णा॥ जरद्भवा॥ जातिप्रिया जीवनस्था जीमूत
सदृशाच्छविः ३२ जन्या जनहिता जाया जंभभि
जंभमालिनी जवदा जववह्वाह्वा जवानी ज्वर

हा॥ज्वरा॥ ३३॥ फं फा॥ ऽनिलमयी॥ फं फा॥ फणत्का
रकरा॥ च॥ सा॥ फिं टीशा॥ फम्य हृतन्॥ फंपा॥ फंपत्रा
सनिवारिणी॥ ३४॥ टकारस्या॥ टंकथरा॥ टंकारा
करशाटिनी॥ ट क्कुरा॥ ठीत्कृति॥ श्चैव॥ ठिं ठी रवस
माहृता ठं ठा निलमयी॥ ठं ठा॥ ठणत्कारकरा॥ च॥
सा ३५ डाकिनी डामरी चैव डिंडिमध्वनिनंदि
नी ढक्का स्वना प्रिया ढक्का नपिनी नापिनी

प्र. तथा ॥ ३८ ॥ तरुणी ॥ तुंदिला ॥ तुंदा ॥ तामसी ॥ च ॥ तपःप्रि
स. या ॥ ताम्रा ॥ ताम्रांबरा ॥ ताली ॥ तालीदलविभूषणा ॥ ३९
८ तुरंगा ॥ त्वरिता ॥ त्रेता ॥ तोतला ॥ तोदिनी ॥ तुला ॥ तापत्र
8 यहरा ॥ तमा ॥ तालकेशी ॥ तमालिनी ॥ ४० ॥ तमालदल
वछ्यामा ॥ तालस्वनवती ॥ तमी ॥ तामसी च तमिस्रा
च ॥ तीव्रा ॥ तीव्रपराक्रमा ४१ तटस्था तिलतैलाक्ता
तरुणी तपनद्युतिः तिलोत्तमा तिलककृत् तारका

थीष्ठा ष्ठोत्वरा ॥ ४० ॥ तिलपुष्पप्रिया ॥ तारा ॥ तारकेशी ॥
कुटुंबिनी ॥ स्थाणुपत्नी ॥ स्थितिकरी ॥ स्थूलस्था ॥ स्थू
लवर्धिनी ॥ ४१ ॥ स्थितिः ॥ स्थैर्या ॥ स्थविष्ठा ॥ च ॥ स्थापनी
स्थूलविग्रहा ॥ दंतिनी ॥ दंडिनी ॥ दीना ॥ दरिद्रा ॥ दीनव
त्सला ॥ ४२ ॥ देवी देववधू दैत्यदमनी ॥ दंतभूषणा ॥
दयावती दमवती दमदा दाडिमस्तनी ॥ ४३ ॥ दंदशू
कनिभा दैत्यदारिणी देवतानना दोलाक्रीडा द

पु॰ स॰ ५ 9

साधु॥ स्वा॥ दंपती॥ देवतामयी॥ षध॥ दक्षा॥ दीपस्थिता॥ दो
षा॥ दोषहा॥ दोषकारिणी॥ दुर्गा॥ दुर्गार्तिशमनी॥ दुर्ग
मा॥ दुर्गवासिनी॥ दुर्गंधनाशिनी॥ दुःस्था॥ दुःस्वप्नशम
कारिणी॥ दुर्वारा॥ दुंदुभिध्वाना॥ दूरस्था॥ दूरवासिनी॥ षद
दरहा॥ दरदा॥ दात्री॥ दायादा॥ दुहिता॥ दया॥ धुरंधरा॥ धुरी
णा॥ च धौरेयी॥ धनदायिनी ५७ धीरा धीरा धरित्री च
धर्मदा धीरमानसा धनुर्धरा च धमनी धूर्ता धूर्तपति

ग्रहा॥षदा॥धूमवर्णा॥धूमपाना॥धूमला॥धूममोहि
नी॥नलिनी॥नंदिनी॥नंदा॥नादिनी॥नंदबालिका॥४९॥
नवीना॥नर्मदा॥नर्मिनिर्मिनियमनिश्चया॥निर्मला
निगमाचारा॥निम्नगा॥नग्नकामिनी॥५०॥नीति॥नि
रंतरा नग्नी निर्लेपा निर्गुणा॥नतिः॥नीलग्रीवा॥नि
रीहा च निरंजनजनी नवी ५१ नवनीतप्रिया॥ना
री नरकार्णवतारिणी नारायणी निराकारा नि

प्र॰ षुरणा॥ निपुणप्रिया॥ प॥ निपुणा॥ निद्रा॥ नरेंद्रस्था॥ नमिता
स॰ ॥ऽनमिता॥ऽपि॥ च॥ निर्गुंडिका॥ च॥ निर्गुंडा॥ निर्मांसा॥ऽना
१॰ मिका॥ निभा॥ प॥ पतना किनी॥ पताका॥ च॥ पलप्रीति॥
र्यशस्विनी॥ पीना॥ पीनस्तनी॥ पत्नी॥ पवनाशनशा
यिनी॥ प॥ परा॥ऽपरा कलापाका पाकक्रतुरतिः
प्रिया॥ पवनस्था॥ सुपवना तापसप्रीतिवर्धिनी पप
पशुहद्धिकरी पुष्टिः पोषणी पुष्पवर्धिनी पुष्पि

10

णी॥पुस्तककरा॥पुन्नागनलवासिनी॥पद्मपुरंदर
प्रिया॥प्रीतिः॥पुरमार्गनिवासिनी॥पाशी॥पाशकरा
पाशघ्ना॥बंधुहा॥पांसुला॥पशुः॥पंग॥पटुः॥पटासा॥
परस्पधारिणी॥पाशिनी॥नघ्ना॥पापघ्नी॥पतिपत्नी
च पतिता ऽपतिता ऽपिच॥पद॥पिशाची॥च पिशा
चघ्नी पिशिताशनतोषिता पानदा पानपात्रा च
पानदानकरोद्यता पए पेया प्रसिद्धा पीयूषा पू

प्र०
स०
११

र्णा ॥ पूर्णमनोरथा ॥ पतङ्गभा ॥ पतङ्गाङ्गा ॥ पातपुण्यप्रि
या ॥ पुरी ॥ द० ॥ पंकिला ॥ पंकमग्ना ॥ वपानीया ॥ पंजरस्थि
ता ॥ पंचमी ॥ पंचयज्ञा च ॥ पंचना ॥ पंचमाप्रिया ॥ द० ॥ पंच
मुद्रा ॥ पुंडरीका ॥ पिकी ॥ पिंगललोचना ॥ प्रियंगुमंज
री ॥ पिंडी ॥ पिंडिता ॥ पांडुरप्रभा ॥ द० ॥ प्रेतासना प्रिया
लस्था पांडुघ्नी पीनसापहा फलिनी फलयात्री
च फलश्रीः फणिभूषणा फूत्कारकारिणी स्फारा

फुल्ला॥फुल्लांबुजासना॥फिरंगह्वा॥स्फीतमतिः॥स्फी
तिः॥स्फीतकरी॥तथा॥दक्ष॥बलमाया॥बलाराति॥ब
लिनी॥बलवर्धिनी॥वेणुवाद्या॥वनचरी॥विरावजन
यित्र्यपि॥९५॥विद्या॥विद्याप्रदा॥विद्याबोधिनी॥बोध
दायिनी बुद्धमाता च बुद्धा चा॥वनमालावती॥वरा
९६ वरदा वारुणी वीणा वीणावादनतत्परा॥वि
नोदिनी विनोदस्था वैष्णवी विष्णुवल्लभा ९७ वि

प्र· या ॥ वैद्यचिकित्सा ॥ च ॥ विवर्णा ॥ विष्वविष्कृता ॥ विद्वत्क
स· विकला ॥ वेन्ना ॥ वितन्द्रा ॥ विगतज्वरा ॥ ददा ॥ विरावा ॥ वि
१२ विया ॥ रावा ॥ बिंबोष्ठी ॥ बिंबवत्सला ॥ विंध्यस्था ॥ वीरवंद्या
12 च ॥ वरीयान परायवित् ॥ दक्ष ॥ वेदांतवेद्या ॥ वेद्या ॥ च ॥ वैद्या
च ॥ विजयप्रदा ॥ विरोधवर्धिनी ॥ वंध्या वंध्याबंधनिवा
रिणी ७० भगिनी भगमाला च भवानी भवभावि
नी भीमा भीमानना भैमी भंगुरा भीमदर्शना ७१

भिल्ली॥भल्लधरा॥भीरु॥भेरुंडे भभयापहा॥भगसर्पि
णी॥ऽपि॥भगा॥भगरूपा॥भगालया॥७२॥भगासना
भगामोहा॥भेरी॥भांकाररंजिनी॥भीषणा॥ऽभीष
णा॥सर्वा॥भगवत्य॥ऽपिभूषणा॥७३॥भारद्वाजा॥
भोगदात्री भवघ्नी॥भूतिभूषणा॥भूतिदा॥भूमि
दात्री च भूपतित्वप्रदायिनी॥७४ भ्रमरी॥भ्रामरी
नीला भूपालमुकुटस्थिता मत्ता मनोहरा मा

प्र. स. १३

13

ना॥मानिनी॥मोहिनी॥महा।७५॥महालक्ष्मी॥मदक्षीवा
मदिरा॥मदिरालया॥मदोद्धता॥मतंगाख्या॥माधवी॥मधु
मंथिनी।७८॥मेधा॥मेधाकरी॥मेध्या॥मध्या॥मध्यवया
स्थिता॥मद्यपा॥मांसला॥मत्स्या॥मोदिनी॥मैथुनोद्धता॥
७९॥मुद्रा॥मुद्रावती॥माता॥माया॥महिममंदिरा महा
माया॥महाविद्या॥महामारी महेश्वरी ७८ महादेव
वधू मान्या मथुरा मेरुमंडला मेदस्वनी मेदसप्री

महिषासुरमर्दिनी ॥ ७९ ॥ मंडपस्था ॥ मठस्था ॥ मा ॥ मा
ला ॥ मालाविलासिनी ॥ मोक्षदा ॥ मुंडमाला ॥ च ॥ मदिरा
गर्वगर्भिता ॥ ८० ॥ मातंगिनी ॥ च ॥ मातंगी ॥ मातंगतनया
मधुः ॥ मधुस्रवा ॥ मधुरसा ॥ मधूककुसुमप्रिया ॥ ८१ ॥ या
मिनी यामिनी नाथभूषा ॥ या ॥ वकरंजिता ॥ यवांकुरप्रि
या ॥ या ॥ मा ॥ यवनी यवनाधिपा ॥ ८२ ॥ यमघ्नी ॥ यमवा
णी च यजमानस्वरूपिणी यज्ञा यज्वा यजुर्यज्वा

प्र·
स·
१४

14

यशोनिकरकारिणी॥द३॥यज्ञसूत्रप्रदा॥ज्येष्ठा॥यज्ञकर्म
करी॥यशाः॥यशस्विनी॥यज्ञसंस्था॥यूपस्तंभनिवासि
नी॥द४॥रंजिता॥राजपत्नी॥च॥रमा॥रेखा॥रवी॥रणी॥र
जोवती॥रजश्चित्रा॥रजनी॥रजनीपतिः॥द५॥रागिनी॥
राजिनी॥राज्या॥राज्यदा॥राज्यवर्धिनी॥राजन्वती राजनी
ति॥स्त्वर्या॥राजनिवासिनी द६ रमणी रमणीया च रा
मा रामवती रतिः रेतोवती रतोत्साहा रोगहा रोग

कारिणी॥८७॥रंगा॥रंगवती॥रागा॥रागज्ञा॥रागिनी॥र
णा॥रंजिका॥रजकी॥रंजा॥रंजिनी॥रक्तलोचना॥८८॥रक्त
चर्मधरा॥रंत्री॥रक्तस्था॥रक्तवाहिनी॥रंभा॥रंभा॥फल
प्रीतिः॥रंभोरू॥राघवप्रिया॥८९॥रंगभृद्॥रंगमधुरा॥रो
दसी रोदसी॥रहा॥रोगकर्त्री॥रोगहर्त्री॥रोगभृद्॥रोग
शापिनी ९० वंदी वंदिस्तुता बंधुर्बंधूककुसुमा
धरा वंदिता वंदिमानाच बंधुरा बैंदवी विभा ९१

विंकी॥ विंकपला॥ विंका॥ विंकस्था॥ विंकवत्सला॥ वे

वृ· दैर्विलग्ना॥ विग्नाच॥ विधि॥ र्विधिकरी॥ विया॥ ९२॥ शंखि

स· नी॥ शंखनिलया॥ शंखमालावती॥ शामी॥ शंखपात्रा

१५ शिनी॥ शंखा॥ शंखा॥ शंखगला॥ शापशी॥ ९३॥ शिंबी॥

15 शरावती॥ श्यामा॥ श्यामांगी॥ श्यामलोचना श्मशा

नस्था॥ श्मशाना॥ श्मशाना च श्मशानस्थलभूषणा

९४ शर्मदा शमहर्त्री च शाकिनी शंकुशेखरा

शांतिः ॥ शांतिप्रदा ॥ शोभा ॥ शोभस्था ॥ शोभशायिनी ॥
९५ ॥ शेमुषी ॥ शोषिणी ॥ शौरी ॥ शरीरी ॥ शौर्या ॥ शारा ॥
शारिः ॥ शापदा ॥ शापहारी ॥ श्रीः ॥ शंपा ॥ शपथ्य ॥ दायि
नी ॥ ९६ ॥ शृंगिणी ॥ शृंगिपलभुक् ॥ शंकरी ॥ शांकरी ॥
च सा शंका शंकापहा ॥ संस्था ॥ शास्वती ॥ शीतला ॥
शिवा ९७ शवस्था शवभुक् शैवी ॥ शाववर्णी ॥ शा
वोदरी शायिनी शावशायना शिंशिपा शिंशिपा

स्र. यना॥शवाकुंडलिनी॥शैवा॥शंकरा॥शिशिरा॥शिरा
स. शवकांची॥शवश्रीका॥शवमाला॥शवाकृतिः॥५५॥
२८ शंपिनी॥शंकुशक्तिः॥शं॥शांतनुः॥शीलदायिनी॥सिं
धुः॥सरस्वती॥सिंधुसुंदरी॥सुंदरानना॥साधुसिद्धिः॥
16 सिद्धिदात्री॥सिद्धा॥सिद्धसरस्वती॥संततिः संपदा
संपत्संवित्संपत्तिदायिनी ॥ सपत्नी सरसा सारा
सारस्वतकरी सुधा सरः समा समाना च समारा

ध्या ॥ समसन्दा ॥ समिद्धा ॥ समदा ॥ संमा ॥ संमोहा ॥ सम
दर्शिना ॥ समितिः ॥ समिथा ॥ सीमा ॥ सावित्री ॥ संविदा ॥ स
ती ३ ॥ सवना ॥ सवनाधारा ॥ सावना ॥ समरा ॥ समी ॥
समीरा ॥ समनाः ॥ साध्वी ॥ सध्रीचीन्या ऽसहायिनी ॥ ध
हंसी हंसगतिः हंसा हंसोज्ज्वलनिचोलयुक् हलि
नी हलदा हाला हरश्रीः हरवल्लभा ॥ ५ ॥ हेला हे
लावती हेमा हेमवस्त्रा हेमवर्धिनी हंता हानि हे

प्र·
स·
१८
17

याह्वा॥ घना॥ हंन॥ हा॥ हंन॥ हारिणी॥ दा॥ हुंकारी॥ हंन॥ का॥ हुं
का॥ ह्री॥ ह्रा॥ ह्रा॥ ह्रा॥ ह्रना॥ हिता॥ हेमप्रभा॥ हरवती॥ हारी
ना॥ हरिसंमता॥ ७ होरी॥ होत्री॥ होलिका॥ च॥ होम्या॥ हो
मा॥ हवि॥ र्हरिः॥ हारिणी॥ हरिणीनेत्रा॥ हिमाचलनिवा
सिनी॥ प॥ लंबोदरी॥ लंबकर्णा॥ लंबिका॥ लंबविग्रहा
लीला॥ लीलावती॥ लोला॥ ललना॥ लालिना॥ लता ९
ललामलोचना॥ लोच्या॥ लोलाक्षी॥ लक्ष्मणा॥ लदा॥ लं

पती ॥ लुंपती ॥ लंपा ॥ लोपामुद्रा ॥ ललंतिनी ॥ १० ॥ लति
का ॥ लंघिका ॥ लंघा ॥ लघिमा ॥ लघुमध्यमा ॥ लघीय
सी ॥ लघूदर्का ॥ लूना ॥ लूननिवारिणी ॥ ११ ॥ लोमभ्रू ॥ लो
मलोम्नी ॥ च ॥ लुलती ॥ लुलुलुंपिनी ॥ लुलायस्था ॥ च ॥
लहरी ॥ लंकापुरपुरंदरी ॥ १२ ॥ लक्ष्मी ॥ लक्ष्मीप्रदा ॥ ल
क्ष्या ॥ लक्ष्यबलगतिप्रदा ॥ क्षणा ॥ क्षपा ॥ क्षण ॥ क्षीणा ॥
क्षमा ॥ क्षांतिः ॥ क्षमावती ॥ १३ ॥ क्षामा ॥ क्षामोदरी ॥ क्षो

प्र॰ एणी॥ ह्रोंणीभ्य॥ ह्रांत्रियांगना॥ ह्रंपा॥ ह्रंपाकरी॥ ह्रींरा॥
स॰ त्रीरदा॥ ह्रींरसागरा॥ २४॥ ह्रंमंकरी॥ ह्रंयकरी॥ ह्रंयम्भ॥
१८ ह्रंयदा ह्रंतिः॥ ह्रुरंती॥ ह्रुद्रिका॥ ह्रुद्रा॥ ह्रुन्त्वामा॥ ह्रुर
18 पानका॥ १०००॥ १५॥ मातः सहस्रनामेदं प्रत्यंगिर्याः
प्रदायकं॥ यः पठेत्प्रयतो नित्यं दरिद्रो धनदो भवेत्
१८ अनाचांतः पठेन्नित्यं सचापि स्यान्महेश्वरः मूकः
स्याद्वाक्पतिर्देवी रोगी नीरोगतां भजेत् १७ अपुत्रः

पुत्रमाप्नोतित्रिषुलोकेषुविश्रुतं॥वंध्यापिस्तनेनत
नयान्नावस्थबहुरुङ्गयदाः॥१८॥राजानःपादनम्रास्तु
स्तस्यदासत्ववस्फुटाः॥अरयःसंत्तयंयांतिमनसासं
स्मृताअपि॥१९॥दर्शनादेवजायंतेनरानार्योपिन
ष्टपुण्याः कर्त्ता स्तीस्त्वयंवीरोजायतेनात्रसंशयः॥२०
यंयंकामयतेकामंतंतंप्राप्नोतिनिश्चितं॥दरितेनच
तस्याग्निनास्तिशोकःकदाचन २१ चतुष्पथेथवागे

चयः पठेत्साधको न्नमः ॥ एकाकी निर्भयो धीरो दक्षिण
वर्त्तनरो न्नमः ॥ २२ ॥ मनसा चिंतितं कार्यं तत्स्य सिद्ध्य
त्यसंशयं ॥ विना सहस्रनाम्नां यो जपेन्मंत्रं कदाचन
॥ २३ ॥ न सिद्धो जायते तस्य मंत्रः कल्पशतैरपि ॥ कुज
वारे श्मशाने च मध्याह्ने यो जपेन्नया ॥ २४ शतावर्त्या
सजायेत कर्त्ता हर्त्ता न्रणामिह रोगार्त्तो यो निशीथ्यां
नेपठेद्भसि संस्थितः २५ सद्यो नी[illegible]मेतिय

दिस्यान्निर्भयस्तदा॥अर्धरात्रेश्मशानेवाश्मानिवा

रेजपेन्मनुं॥२८॥अष्टोत्तरसहस्रंतुदशावारंजपेन्न

नः॥सहस्रनाममेतद्धिनदायातिस्वयंशिवा॥म

हापवनहूपेणघोरगोमायुनादिनी॥नदायदिन

भीतिःस्यात्ततोदेहीतिवाग्भवेत्॥३०॥नदापश्चुब

लिंदद्यात्स्वयंगृह्णातिचंडिका॥यद्येष्टंचवरंदत्वा

यातिप[illegible]शिवा २९ रोचना गुरु कस्तूरी क

प्र· पूर्यं॥मद॥चंदनैः॥कुंकुमप्रमुखमाभ्यांतु॥लिखितंभूर्ज
स· पत्रके॥३॥शुभनक्षत्रयोगेतु समभ्यर्च्य यद्यटांतरे॥क्ष
२० तसंपातनेनात्सिद्धंधार्यंतद्दक्षिणेकरे॥सहस्रनाम
20 स्वर्णस्थंकंठेवापिजितेंद्रियः॥तदायंप्रणमेन्मंत्री
क्रुद्धःसम्रियतेनरः॥३४॥यस्मैददातिचस्वा.त्तिसमवे
हनदोषमः॥इष्टाप्यवद्गलून्नांनमीःऊनापिजाय
ते॥३५॥बालव..गमियंरक्त.गर्भिणी.नामपियुवं

प्रत्यंगिरासहस्रनाम

8702

F-20

Complete

